सं श्रोशिव श्रीहतक/64~84/15159.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. मनेजिंग डायरेक्टर, हरियाणा को ग्रोशिव श्रापर मिल, रोहतक, के श्रमिक श्री मामन श्रम तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई प्रीक्षोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641→1-अम/70/33573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित वरकारी अधिसूचना मं. 3864-ए.एत.ओ.(ई)अम-70/1343, दिनांक 3 मई. 1970 द्वारा उस्त अविनियम की धारा 7 के अवीन गठित ध्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं. तो कि उक्त प्रवस्त को तथा अभिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :—

क्या श्री मामन राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकवार है?

मं. मो.वि./रोह्तक/37-85/15166.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० बी. के.एण्ड कम्पनी मार्फत एच.एन.जी. उन्डस्ट्रीज लि.. वहादुरमङ्, (रोह्तक), के श्रमिक श्री रघुन थ तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई बौद्योगिक विवाद है:

भीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब श्रीछोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शिक्समों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-अम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के नाथ गठिन सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए-एस. श्री. (ई)अम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:---

क्या श्री रयुनाथ की सेवाभों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

दिनांक 12 भ्रप्रैल, 1985

सं. थो. बि./फरीदाबाद/42-85/15513.--बूंकि हरियाणा ने राज्यपाल की राय है कि मैं अप्रयोध्या ठेकेंदार मार्फत प्रयावाली स्टरविधरल प्राव्हित विकास मधुरा रोड, फरीदाबाद, (2) अप्रपाली स्ट्रविधरत प्राव्हित मधुरा रोड, फरीदाबाद, के अमिक श्री उश्रो सिहतया उसने प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मध्यले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

श्रौर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, ग्रोद्योगिक विवाद यिविनयम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रीक्ष सूचना सं. 5415—3—श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495—जी—श्रम-88 श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रीविनयम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरोदावाद, को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए किर्दिष्ट करते हैं, जो कि प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयका संबंधित मामला है:---

क्या श्री उक्षो तिह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का इकदार है ?